CH-2 - काकी

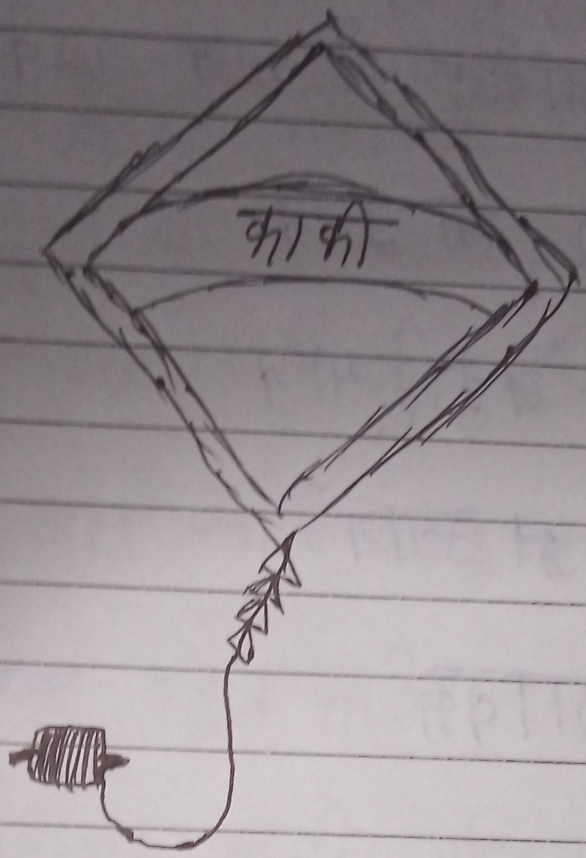

लेखक परिचय

- सियाराम शरण गुप्त (1895-1963)
- जन्मस्थान - चिरगाँव (झाँसी)
- वे दुःख वेदना और करुणा के कवि थे।

शब्दार्थ

* कोहराम - रोने-पिटने का शोर होना
* करुण स्वर - उदास स्वर
* विलाप - रोना
* बिलख - जोर-जोर से रोना
* उतावला - आवेश में काम करने वाला
* चवन्नी - चार आने
* समझदार - बुद्धिमान
* तरकीब - उपाय
* हतप्रभ - आवक

मौखिक :-

(क) श्यामु को पतंग उड़ाने का शौक था।

(ख) श्यामु ने अपने काका से एक पतंग माँगा।

(ग) श्यामू पतंग को भगवान राम के पास भेजना चाहता था।

(घ) पतंग के ऊपर काकी लिखा था।

(ङ) काकी के प्रति अबोध श्यामू का प्रेम देखकर विश्वेश्वर की आँखों से आँसु आ गए।

लिखित :-

(3) (क) 'काकी' भगवान के पास गई है यह बात श्यामु की समझ में नहीं आई क्योंकि श्यामु अबोध बालक था उसे समझाना बहुत कठिन था इसलिए उसे बहलाने के लिए यह बात कही गई। अगर उसे बताया जाता कि उसकी काकी की मृत्यु हो गई है और वह कभी वापस नहीं आएगी तो उसे बहुत दुख होता।

श्यामु को उम्मीद थी कि एक दिन उसकी काकी भग
राम के घर से वापस आएगी और उसी पहले की
तरह प्यार करेगी / दूसरे शब्दों में कह सकते
हैं कि श्यामु से उसकी काकी की मृत्यु की
सच्चाई छुपाई गई /

(2) श्यामु पतंग द्वारा काकी को नीचे लाना चाहता था
इसके लिए उसने अपने काका कीकोट से पैसे निकाले
तथा उन पैसो से उसके भोला से पतंग व रस्सी
मँगवाई / पतंग पर 'काकी' के नाम की चिट थी लगा
दी ताकी पतंग सीधे काकी के पास पहुँचे और वह
राम के घर से पतंग पकड़कर नीचे आजाए /

(3) श्यामू का अपनी काकी के प्रति असीम प्रेम देखकर
तथा उनको पाने के लिए उसने जो उपाय किए

उनको देखकर विशेश्वर हतप्रभ हो गए।

(4)(2) इन पंक्तियों को पढ़कर लगता है कि श्यामु की मनः स्थिति अत्यंत दयनीय व नाज़ुक थी। अपनी काकी की मृत्यु हो जाने पर या हमेशा-हमेशा के लिए सो जाने के भेद से वह अनजान था जो उसके दुख का मूल कारण था। यही वजह थी जब उसके घरवाले काकी को शमशान घाट ले जा रहे थे तो वह फूट-फूटकर रोने लगा। उसका रोते-बिलखते देखकर घर वालों का कलेजा भी मुँह को आ गया। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि उसके घरवाले अपने को और श्यामु को सही स्थिति से अवगत नहीं करा पा रहे थे।